राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्

नई दिल्ली

(Registered Under Societies Registration Act, XXI of 1860, No. District East/Society/1861/2017)

राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्

रासविप

एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति

दर्शन, स्थापना एवं परिचय

राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्

के पदाधिकारी

1.	प्रो. पी.वी. कृष्ण भट्ट	प्रसिद्ध समाजशास्त्री, बैंगलुरु, कर्नाटक	संरक्षक
2.	प्रो. सुषमा यादव	नई दिल्ली	अध्यक्ष
3.	प्रो. आद्या प्रसाद पाण्डे	बी.एच.यू., वाराणसी	उपाध्यक्ष
4.	प्रो. सी.पी. सिंह	भागलपुर, विहार	उपाध्यक्ष
5.	प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	महामंत्री
6.	डॉ. शीला राय	जयपुर, राजस्थान	कोषाध्यक्ष
7.	प्रो. अश्विनी महापात्रा	नई दिल्ली	मंत्री
8.	डॉ. प्रो. पवन कुमार शर्मा	भोपाल	मंत्री
9.	गोविन्द कृष्णा शर्मा	कोटा, राजस्थान	मंत्री
10.	एच.एम. कृष्णा	बंगलौर, कर्नाटक	मंत्री
11.	प्रो. राजकुमार भाटिया	दिल्ली	सदस्य
12.	प्रो. जी. गोपाल रेड्डी	हैदराबाद	सदस्य
13.	प्रो. नलिनी कान्त झा	पुदुचेरी	सदस्य
14.	डॉ. वलवान गौतम	दिल्ली	सदस्य
15.	प्रो. अमित ढोलकिया	अलकापुरी	सदस्य
16.	वनजा	बैंगलौर	सदस्य
17.	हरी मोहन शर्मा	दिल्ली	सदस्य
18.	डॉ. इनाक्षी चतुर्वेदी	जयपुर, राजस्थान	सदस्य

राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्

नई दिल्ली

1. प्रस्तावना–औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त समाज विज्ञान

भारतवर्ष मे समाज–विज्ञान के विषयों का पाठयक्रम, अध्यापन एवं अनुसंधान सब औपनिवेशिक मानसिक जकड़ता से ग्रस्त है। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, प्रभृति विषयों में भारतवर्ष का समाज प्रतिबिम्बित नहीं होता। न ही यहां के जीवन मूल्य, न दर्शन, न संस्कृति। यूरोप–विशेषकर इंग्लैण्ड के विचारकों ने अपने समाज को जैसा देखा, उसका मनोवैज्ञानिक अनुशीलन कर कुछ सामान्यीकरण करते हुए कुछ सिद्धांत, कुछ नियम बनाये। क्योंकि मानवीय मनोविज्ञान मे न्यूनाधिक समानता होती है, इसलिये उसमें उन्हें सार्वभौमिक सत्य के दर्शन होते हैं। भारतवर्ष तथा जहां–जहां उनकी सत्ता थी, वहां उन सिद्धांतों को आरोपित करने में उन्हें अप्रतिम सफलता प्राप्त हुई। विश्वविद्यालयों मे भी औपचारिक संरचना को निर्मित कर वहां के विद्वानों के मस्तिष्क मे औपनिवेशिक चिंतन की श्रेष्ठता को भर देना और उसी के अनुसार पाठयक्रम का निर्माण कर पढ़ाने एवं अनुसंधान करने की पद्धति को अंग्रेज शासकों ने अत्यंत महत्व दिया और यहां के विद्वानों ने उसे अपना दैव दायित्व समझकर स्वीकार भी कर लिया।

2. इतिहास लेखन के प्रति निष्क्रियता

यह भी उल्लेखनीय है कि इतिहास लेखन में भारतीय विद्वान प्रारंभ से ही निष्क्रिय रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे इसे आत्मश्लाघा से जोड़कर हमेशा बचने का प्रयास करते रहे हैं। उनका विश्वास मौलिक सृजन पर अधिक रहा है अपेक्षाकृत वैयक्तिक घटनाओं के संकलन और लेखन को इसी का अनुचित लाभ मुगल शासकों और

पाश्चात्य कूटनीतिज्ञ अंग्रेज शासकों ने उठाया और ये परिकल्पना दी भारतवर्ष का कोई अपना इतिहास रहा ही नहीं। उपलब्ध अभिलेखों को भी तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत किया गया और उन्हें उद्धृत कर शोध पत्र लिखने की एक अंतर्राष्ट्रीय शैली विकसित की गई जिसके अनुसार जिसमें जितने अधिक संदर्भ होंगें वो उतना ही अधिक श्रेष्ठ शोधपत्र/शोधप्रबंध होगा और उसमें उतनी ही अधिक विश्वसनीयता होगी। इसकी अद्यतन परिणत साइटेशन इंडेक्स, इम्पैक्ट फैक्टर इत्यादि मे हुई है। संदर्भों के उद्धरण की तुलना मे आत्मानुभूति को महत्व नहीं दिया गया। साथ ही मौलिक सृजन के स्थान पर संदर्भ उद्धरण से भरे हुये शोध को महत्व दिया जाने लगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमें इतिहास, ऐतिहासिक दृष्टि एवं प्रविधि तीनों के पुर्नलेखन पर गंभीरतापूर्वक सोचना होगा। इसी परिप्रेक्ष्य में ये भी समीचीन होगा कि हमारे इतिहास पुरुष जिन्होनें विशेषकर मुगलों के विरूद्ध युद्ध लड़ा और वीरगति को प्राप्त हुए उन्हें भी इतिहास मे पर्याप्त सम्मान नहीं दिया। गढ़ मण्डला की प्रसिध्द साम्राज्ञी रानी दुर्गावती इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

3. भारतीय समाज दर्शन से सम्बन्धित कुछ बिन्दु

3.1 अवतार एवं समाज सुधारकों का योगदान

भारतीय समाज में जब जब विकृतियां आईं उन्हें दूर करने के लिए विभिन्न, समाज सुधारकों ने जन्म लिया और पूरे समाज को रूढ़ियों से मुक्त कराने की चेष्टा की। ईश्वरीय अवतार की योजना भी विशेष तौर पर समाज को परिष्कृत करने के लिए ही हुई है। जहां वराह अवतार में पृथ्वी का उद्धार हुआ है वहीं अन्य अवतारों में समाज सुधारने का लक्ष्य स्पष्ट धर्म की स्थापना के लिए प्रमुख रुप से ईश्वर ने अवतार लिया है। साधुओं की रक्षा के लिए दुष्टों का विनाश के लिए और धर्म की संस्थापना के लिए ईश्वरी अवतार हुआ है अवतारों के अतिरिक्त आधुनिक समाज में जो प्रमुख समाज सुधारक हुए उनकी चर्चा भी आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर आदि शंकराचार्य, राजा

राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ई वी रामास्वामी, श्री नारायण गुरु स्वामी, सहजानंद सरस्वती, महात्मा ज्योतिराव फुले, जी जी आगरकर। मोहन गोविंद रानाडे, स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, हरि देशमुख बसवन्ना, बाबा आमटे, कर्वे, टी के महादेवन, महादेव विट्ठल, रामजी शिंदे, बाल शास्त्री जांभेकर, पांडुरंग शास्त्री अठावले, तुकोजीराव होलकर, महात्मा गांधी, बाबा साहब अंबेडकर, राम मनोहर लोहिया, दीनदयाल उपाध्याय इत्यादि इन सभी ने अपने अपने समय में समाज मैं व्याप्त रूढ़ियों कुरीतियों एवं विकृतियों को दूर कर समाज को समरस बनाने का प्रयास किया है। दुर्भाग्यवश भारतीय समाज विज्ञान में इन्हें पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया।

3.2 कवियों एवं साहित्यकारों का योगदान

इसी प्रकार बहुत से कवियों तथा साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज का वर्णन किया है, उस पर भी समाज विज्ञानियों की पर्याप्त दृष्टि नहीं पड़ी है। उदाहरणस्वरूप कालिदास की रचनाएं विशेषकर रघुवंश में, श्रीमद्भागवत में, महाभारत में, श्रीमद भगवत गीता में, तथा कबीर, तुलसी, रहीम, सूरदास, रसखान, मीराबाई, संत ज्ञानेश्वर, प्रेमचंद, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, फणीश्वर नाथ रेणु इत्यादि की रचनाओं को आज समाज विज्ञान का आधार बनना चाहिए जो नहीं हो पाया। यही नहीं मनुस्मृति, आचार्य बृहस्पति, शुक्राचार्य, कौटिल्य, कामंदक, सोमदेव सूरी, इत्यादि द्वारा विरचित स्पष्ट समाज विज्ञान के सिद्धांतों को भी नकार दिया गया।

इनके स्थान पर एडम स्मिथ, अगस्त काम्टे, मैक्स वेबर, इमाईल दुर्खीम, कार्ल मार्क्स, जे एस मिल, सिगमंड फ्लाइट, स्पेंसर, सिमरन आर के मार्टन, जॉर्ज हर्बर्ट मीड, बेकन, मैकियावेली इत्यादि पाश्चात्य विद्वानों द्वारा रचे हुए समाज विज्ञान को भारतवर्ष में यथावत स्वीकार कर लिया गया है।

3.3 स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत समाज विज्ञान की दिशा

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत यह आवश्यक था की समाज विज्ञान की दिशा का उन्मुखीकरण भारतीय समाज एवं भारतीय समाज विज्ञानियों के द्वारा निरूपित सिद्धांतों के अनुरूप होता। परंतु ऐसा नहीं हो सका, भारत के समाज विज्ञानियों का पाश्चात्य मोह, जोखिम न उठाने की प्रवृत्ति, संस्कृत का ज्ञान न होना, आत्मविश्वास की कमी इत्यादि ने अपने समाज विज्ञान को बनाने का काम नहीं करने दिया। वामपंथी विचारकों ने बहुत अनुचित लाभ उठाया और भारत से डिस्कनेक्ट समाज विज्ञान का एक विशालकाय अकादमिक दैत्य खड़ा कर दिया। शासन में बैठे हुए सत्ताधारियों ने जहां एक ओर इन्हें आवश्यकता से अधिक संरक्षण प्रदान किया वही धनराशि प्रदान करने वाली संस्थाओं ने इनकी भरपूर सहायता भी की, इसके कारण भारतीय समाज विज्ञान की पूर्णिया अपूरणीय क्षति हुई।

3.4. भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों मे अंतर

भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों मे अंतर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। इसका एक संक्षिप्त तुलनात्मक विवरण निम्नानुसार है–

भारतीय मूल्य	पाश्चात्य मूल्य
सामूहिक जीवन	व्यक्तिगत जीवन
परोपकार	व्यक्तिगत स्वार्थ
परस्पर सहयोग	प्रतियोगिता
विश्व की समस्त प्रजातियों मे समरसता	मानव की शोषणकारी प्रवृत्ति को महत्व
अध्यात्म एवं धर्म आधारित संरचना	पदार्थवादी दृष्टि
आत्मावलोचन एवं व्यक्तिगत आत्मानुभूति पर आधारित ज्ञान	उपलब्ध संदर्भ सूची एवं बाह्य प्रयोग से उत्पन्न

3.3 स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत समाज विज्ञान की दिशा

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत यह आवश्यक था की समाज विज्ञान की दिशा का उन्मुखीकरण भारतीय समाज एवं भारतीय समाज विज्ञानियों के द्वारा निरूपित सिद्धांतों के अनुरूप होता। परंतु ऐसा नहीं हो सका, भारत के समाज विज्ञानियों का पाश्चात्य मोह, जोखिम न उठाने की प्रवृत्ति, संस्कृत का ज्ञान न होना, आत्मविश्वास की कमी इत्यादि ने अपने समाज विज्ञान को बनाने का काम नहीं करने दिया। वामपंथी विचारकों ने बहुत अनुचित लाभ उठाया और भारत से डिस्कनेक्ट समाज विज्ञान का एक विशालकाय अकादमिक दैत्य खड़ा कर दिया। शासन में बैठे हुए सत्ताधारियों ने जहां एक ओर इन्हें आवश्यकता से अधिक संरक्षण प्रदान किया वही धनराशि प्रदान करने वाली संस्थाओं ने इनकी भरपूर सहायता भी की, इसके कारण भारतीय समाज विज्ञान की पूर्णिया अपूरणीय क्षति हुई।

3.4. भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों मे अंतर

भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों मे अंतर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। इसका एक संक्षिप्त तुलनात्मक विवरण निम्नानुसार है–

भारतीय मूल्य	पाश्चात्य मूल्य
सामूहिक जीवन	व्यक्तिगत जीवन
परोपकार	व्यक्तिगत स्वार्थ
परस्पर सहयोग	प्रतियोगिता
विश्व की समस्त प्रजातियों मे समरसता	मानव की शोषणकारी प्रवृत्ति को महत्व
अध्यात्म एवं धर्म आधारित संरचना	पदार्थवादी दृष्टि
आत्मावलोचन एवं व्यक्तिगत आत्मानुभूति पर आधारित ज्ञान	उपलब्ध संदर्भ सूची एवं बाह्य प्रयोग से उत्पन्न

भारतीय मूल्य	पाश्चात्य मूल्य
चिरकालिकता एवं निरंतरता	तात्कालिक, सीमांतवादी दृष्टि
सब स्थानों एवं समस्त प्रजातियों मे एकात्मता	खण्ड–खण्ड, पृथक–पृथक करके विश्लेषण करने की दृष्टि
त्याग के साथ उपभोग	उपभोग की अतिशयता अंतिम लक्ष्य
मनोद्वेगों के उदात्तीकरण से उद्भूत विवेकपूर्ण जीवन व्यवहार	मनोद्वेगों की उच्छृंखल अभिव्यक्ति
परंपराओं से प्रचलित व्यवहार	परिस्थितिजन्य व्यवहार
परंपराओं, रीति–रीवाजों, नियमों को युगानुकूल एवं स्वदेशानुकूल बनाने की अदभुत शक्ति	कट्टरपंथिता एवं पूर्वाग्रहों से ग्रस्त
आत्मास्फूर्त	बाह्य आरोपित
परिवार केन्द्रीय ईकाईः पूर्वज, वृद्ध, शिशु, सब संबंधी तथा अतिथि, पशु–पक्षी इत्यादि का समावेश	व्यक्तिगत इकाई
भावनात्मक एवं सामाजिक संबंधों पर आधारित व्यवहार	जैविक आधार पर व्यवहार
संबोधनों मे भावनाओं का प्रकटीकरण	भावविहीन शुष्क व्यवहार
निरंतर परिष्कार एवं शुद्धीकरण की अदभुत क्षमता	अशुद्ध विकृत मानसिकता को प्रश्रय
सबकी शांति, सबका कल्याण ही अंतिम उद्देश्य	व्यक्तिगत सुख ही अंतिम लक्ष्य

भारतीय मूल्य	पाश्चात्य मूल्य
संपोषणीयता	पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली प्रवृत्ति
वास्तविक प्राकृतिक पदार्थों को महत्व	मुद्रा को महत्व
आत्मा एवं हृदय को प्रेम एवं विश्वास से जीतकर सर्वत्र शांति की व्यवस्था	युध्द एवं अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों के उपयोग द्वारा मानवों की हत्या कर उन्हें पराजित कर अपना वर्चस्व/उपनिवेश बनाने की चेष्टा
सबके विचारों को सम्मान एवं शास्त्रार्थ की समृद्ध परंपरा	अपने विचार को दूसरे के विचार पर आरोपित कर अपनी श्रेष्ठता को स्थापित करना।
विज्ञान के नियमों से भिन्न मानवीय संवेदना को महत्व देकर साहित्य समाज विज्ञान का सृजन करना।	वैज्ञानिक अनुसंधान के निष्कर्षों को मानव मनोविज्ञान के समतुल्य मानकर समाज विज्ञान की संरचना

4. भारतीय समाजविज्ञान के पुनर्निर्माण के आधार एवं उपांग

समाज विज्ञान के अंतर्गत आने वाले समस्त विषयों में एक भारत समाज विरोधी पूर्वाग्रह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इस पूर्वाग्रह को सही परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि सारे भारतीय राष्ट्रवादी विज्ञानी एकत्रित होकर निम्नलिखित दो प्रकार से कार्य करना प्रारंभ करें।

1. पाश्चात्य चिंतन एवं वामपंथी सोच उत्पन्न समाज विज्ञान की समीक्षा एवं उसमें आवश्यक संशोधन करना।
2. भारतीय जीवन दर्शन से उत्पन्न समाज विज्ञान की नवीन संरचना करना।

समाज विज्ञान के विषयों मे जो पराभव, उपनिवेश एवं पाश्चात्य मानसिकता का प्रभाव दिखायी पड़ता है उसे निम्नलिखित उपांगों

में विभक्त कर उन पर गंभीर चिंतन एवं शोध करने की आवश्यकता है–

1. दर्शन के स्तर पर
2. प्रत्यय एवं अवधारणाओं के स्तर पर
3. सिद्धांतों के स्तर पर
4. नियमों के स्तर पर
5. परिभाषा के स्तर पर
6. प्रादर्शों के स्तर पर
7. विषयवस्तु के स्तर पर
8. शोध एवं अध्यापन प्रविधि के स्तर पर
9. लेखन, पाठ्यसामग्री निर्माण के स्तर पर
10. अध्यापन के स्तर पर
11. प्रचार–प्रसार एवं प्रकाशन के स्तर पर

5. राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्, नई दिल्ली, स्थापना एवं परिचय

5.1 चिन्तन बैठक

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सन 2008 मे रामभाउ महालगी प्रबोधिनी संस्था मुम्बई मे लगभग 100 समाज विज्ञानियों का एक अधिवेशन हुआ जिसमे राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के माननीय सह सर कार्यवाह श्री सुरेश सोनी जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अधिवेशन मे प्रमुख रुप से निम्नलिखित व्यक्ति उपस्थित रहे –

- श्री पी.वी. कृष्ण भट्ट
- प्रो. राकेश सिन्हा
- डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे
- प्रो. मधुकर श्याम चतुर्वेदी
- प्रो. सुषमा यादव

- डॉ. शीलाराय
- डॉ. राजकुमार भाटिया
- डॉ. शांति श्री पंडित
- प्रो. आर.सी. सिन्हा
- डॉ. ईनाक्षी चतुर्वेदी
- श्री रामशीष सिंह
- श्री श्रीकांत काडदरे
- डॉ. अरूण सिंह
- प्रो. ए.पी. पाण्डेय
- डॉ. हरिमोहन शर्मा
- डॉ. बलवान गौतम
- डॉ. अतुल रावत
- डॉ. गोविन्द शर्मा

तीन दिन के गंभीर चिंतन के उपरांत ये निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् जैसी एक संस्था विकसित की जानी चाहिए जो भारतीय दृष्टि से समाज विज्ञान के अद्यतन अनुसंधानों को प्रोत्साहित करे साथ ही जो पूर्व प्रचलित है उसे आवश्यकतानुसार संशोधित करे।

5.2 विभिन्न आयोजन

इस परिषद् के तत्वावधान में कानपुर, भोपाल में राष्ट्रीय अधिवेशन तथा जबलपुर, नई दिल्ली, शिमला, गांधीनगर, पेहोबा, मेरठ इत्यादि स्थानों पर स्थानीय परिसंवादों का आयोजन हो चुका है। इस परिषद् के तत्वावधान मे दिल्ली मे डॉ. राजकुमार भटिया के नेतृत्व मे कई अकादमिक गतिविधियां भी संपन्न हो चुकी हैं।

5.3 पंजीयन

इस परिषद् का रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी एक्ट–XXI 1860 अंतर्गत पंजीयन भी हो चुका है। इसका पंजीयन क्रमांक –District tast/society/1861/2017 है।

5.4 परिषद् के प्रमुख उद्देश्य

परिषद् के गठन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. समाज विज्ञान विषयों में भारतीय दृष्टिकोण से सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अध्ययन अनुसंधान एवं अध्यापन को प्रोत्साहित करना।
2. समाज विज्ञान विषयों के अन्तर अनुशासनीय दृष्टिकोण विकसित करना एवं परस्पर विचार विनियमय को प्रोत्साहित करना।
3. साहित्य सृजन तथा शोध पत्रिका आदि का प्रकाशन करना।
4. भारतीय वाङ्मय एवं चिन्तन को व्याख्यित एवं प्रचारित करना।
5. कार्यशालाओं सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं व्याख्यान–मालाओं तथा जन–प्रबोधन और विचार–प्रसारण के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन करना।
6. वैश्विक, राष्ट्रीय क्षेत्रीय और स्थानीय समस्याओं को भारतीय दृष्टि से समझना।
7. सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान–प्रदान की गतिविधियों को सम्पन्न एवं प्रोत्साहित करना।
8. संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सम्पर्क, समन्वय व साहचर्य स्थापित करना।
9. पाठ्यक्रमों का निर्माण करना।
10. शोध परियोजनाओं को संचालित करना।

5.5 परिषद् के सदस्य एवं सदस्यता शुल्क

(क) संरक्षक सदस्य – दस हजार रुपये या अधिक

(ख) आजीवन सदस्य – तीन हजार रुपये

(ग) वार्षिक सदस्य – एक हजार रुपये

(घ) संस्थागत सदस्य – पांच हजार रुपये

(च) शोधछात्र – पांच सौ रुपये

5.6 परिषद् के पदाधिकारी

1.	प्रो. पी.वी. कृष्ण भट्ट प्रसिद्ध समाज शास्त्री, बैंगलुरु, कर्नाटक	संरक्षक
2.	प्रो. सुषमा यादव नई दिल्ली	अध्यक्ष
3.	प्रो. आद्या प्रसाद पाण्डे बी.एच.यू., वाराणसी	उपाध्यक्ष
4.	प्रो. सी.पी. सिंह भागलपुर, विहार	उपाध्यक्ष
5.	प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	महामंत्री
6.	डॉ. शीला राय जयपुर, राजस्थान	कोषाध्यक्ष
7.	प्रो. अश्विनी महापात्रा नई दिल्ली	मंत्री
8.	गोविन्द कृष्णा शर्मा कोटा, राजस्थान	मंत्री

5.5 परिषद् के सदस्य एवं सदस्यता शुल्क

(क) संरक्षक सदस्य – दस हजार रुपये या अधिक
(ख) आजीवन सदस्य – तीन हजार रुपये
(ग) वार्षिक सदस्य – एक हजार रुपये
(घ) संस्थागत सदस्य – पांच हजार रुपये
(च) शोधछात्र – पांच सौ रुपये

5.6 परिषद् के पदाधिकारी

1.	प्रो. पी.वी. कृष्ण भट्ट प्रसिद्ध समाज शास्त्री, बैंगलुरु, कर्नाटक	संरक्षक
2.	प्रो. सुषमा यादव नई दिल्ली	अध्यक्ष
3.	प्रो. आद्या प्रसाद पाण्डे बी.एच.यू., वाराणसी	उपाध्यक्ष
4.	प्रो. सी.पी. सिंह भागलपुर, विहार	उपाध्यक्ष
5.	प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	महामंत्री
6.	डॉ. शीला राय जयपुर, राजस्थान	कोषाध्यक्ष
7.	प्रो. अश्विनी महापात्रा नई दिल्ली	मंत्री
8.	गोविन्द कृष्णा शर्मा कोटा, राजस्थान	मंत्री

9.	एच.एम. कृष्णा बंगलौर, कर्नाटक	मंत्री
10.	डॉ. प्रो. पवन कुमार शर्मा भोपाल	मंत्री
11.	प्रो. राजकुमार भाटिया दिल्ली	सदस्य
12.	प्रो. जी. गोपाल रेड्डी हैदराबाद	सदस्य
13.	प्रो. नलिनी कान्त झा पुदुचेरी	सदस्य
14.	डॉ. बलवान गौतम दिल्ली	सदस्य
15.	प्रो. अमित ढोलकिया अलकापुरी	सदस्य
16.	वनजा बैंगलौर	सदस्य
17.	हरी मोहन शर्मा दिल्ली	सदस्य
18.	डॉ. इनाक्षी चतुर्वेदी जयपुर, राजस्थान	सदस्य

सम्पर्क सूत्र

1. **प्रो. सुषमा यादव**
(अध्यक्ष)
डी–2/1, आई.आई.पी.ए. कैम्पस,
आई.पी. इस्टेट, रिंग रोड,आई.आई.पी.ए,
नई दिल्ली – 110 002
मो. 9810074667.
ईमेल : sushmayadav@ignou.ac.in

2. **प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी**
(महामंत्री)
ए. 2, आचार्य निवास
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
मो. 9816678999.
ईमेल : bajpaipersonal@yahoo.com

3. **डॉ. शीला राय**
(कोषाध्यक्ष)
6, शिवाजी नगर, सिविल लाइन्स,
जयपुर, राजस्थान–302 006
मो. 9829017656
ईमेल : sheelarai@rediffmail.com

राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद्, नई दिल्ली (Registered Under Societies Registration Act XXI of 1860) (Registration No. District East/ Society/1861/2017) के लिए आचार्य अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी (महामंत्री) द्वारा श्री पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित।